

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 21, जोशुआ 23-24 जोशुआ की दो विदाई

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 21 है, जोशुआ 23-24, जोशुआ की दो विदाई।

पुनः नमस्कार, इस खंड में, अब हम यहोशू के अंतिम अध्याय, अध्याय 23 और 24 से निपटेंगे।

और इनमें जोशुआ के अंतिम दो विदाई भाषण शामिल हैं, इस बार पूरे देश के लिए। अध्याय 22 में यहोशू ट्रांसजॉर्डन जनजातियों को संबोधित करता है और उनकी वफादारी के लिए उनकी सराहना करता है और फिर वेदी के बारे में गलतफहमी की कहानी है। लेकिन अब 23 में जोशुआ लोगों के एक समूह को संबोधित कर रहा है और कई मायनों में दोनों अध्यायों में काफी समानताएं हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ चल रहा है उसमें कुछ ओवरलैप है। इस वजह से, कुछ विद्वानों ने यह धारणा बनाई है कि शायद वे केवल एक वास्तविक घटना के दो अलग-अलग संस्करणों का प्रतिनिधित्व करते हैं जब जोशुआ ने दो के बजाय केवल एक भाषण दिया था। लेकिन मुझे लगता है कि इतने महत्वपूर्ण अंतर हैं कि हम उन्हें दो अलग-अलग अवसरों के रूप में देख सकते हैं।

एक बात के लिए, पहला अधिक अनौपचारिक और देहाती है, अध्याय 23। यह इतनी आसानी से एक रूपरेखा में व्यवस्थित नहीं है। यह बिल्कुल जोशुआ की तरह है जो लगभग चेतना की धारा में बोल रहा है।

जबकि दूसरा अध्याय, अध्याय 24, बहुत अच्छी तरह से संरचित है, और इसके मूल में एक अनुबंध समारोह, एक अनुबंध नवीनीकरण समारोह, अनुबंध प्रतिज्ञान समारोह है। दूसरे, ऐसा प्रतीत होता है कि पहला जनता के नेताओं को संबोधित है। पद 2 को देखो, यहोशू ने सारे इस्राएल को, उसके पुरनियों, उसके मुखियाओं, उसके न्यायियों, उसके सरदारों को बुलाया, और उन से कहा, और फिर यह आगे बढ़ता है।

इसलिए, यह लोगों के नेताओं के लिए अधिक प्रतीत होता है। जबकि दूसरा, अध्याय 24, पूरे देश के लिए प्रतीत होता है। अतः 24, 1, और 2, यहोशू ने इस्राएल के सब गोत्रों को शकेम में इकट्ठा किया, और पुरनियों को आज्ञा दी, इत्यादि।

परन्तु फिर पद 2 में, उसने इस्राएल के सभी लोगों से कहा, और यह आगे बढ़ता है। तो, यह अध्याय 24 में एक बड़ा समूह प्रतीत होता है। तीसरी बात जो हम कह सकते हैं वह यह है कि पहला, अध्याय 23, स्पष्ट रूप से शीलो में दिया गया था।

अध्याय 18, श्लोक 1, उनके शीलो में इकट्ठा होने और वहां मानचित्र बनाने वालों को भेजने के बारे में बात करता है। और इस बात का कोई संकेत नहीं है कि तब से वे कहीं भी चले गए हैं। तो 18 से 23 तक सभी शिलो में और उसके आसपास प्रकट होते प्रतीत होते हैं।

जबकि 24 में, यह कहा गया है कि वे शकेम में एक साथ एकत्र हुए। तो दो अलग-अलग जगहें। और इसलिए, हम उनके साथ उसी तरह व्यवहार करेंगे।

यहां अध्याय 23 में जोशुआ का भाषण, जैसा कि मैंने कहा है, यह अधिक देहाती, अधिक अनौपचारिक लगता है। कुछ मायनों में, यह अधिक व्यक्तिगत है। कुछ मायनों में, यह जैकब के अंतिम शब्दों की याद दिलाता है।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 49 में, जब वह अपने पुत्रों से बात कर रहा होता है, तो वहाँ विदाई देता है। व्यवस्थाविवरण, अध्याय 32-33 के अंत में मूसा के अंतिम शब्द, वह एक अर्थ में लोगों को उनके लंबे समय के देहाती नेता के रूप में प्रोत्साहित कर रहे हैं। और यहां तक कि डेविड के पास भी, अपने जीवन के अंत में, 2 शमूएल 23 में, कहने के लिए इसी प्रकार के अंतिम शब्द हैं।

यहाँ, इस अध्याय में, जोशुआ पुस्तक के सभी प्रमुख विषयों का सारांश प्रस्तुत कर रहा है। और उनसे आग्रह किया कि वे प्रभु से प्रेम करने, कानून का पालन करने और अपने पड़ोसियों की धार्मिक प्रथाओं से खुद को दूषित न करने में दृढ़ रहें। और उन्होंने वादा किया कि दुश्मनों को बाहर निकालने के अधूरे कार्यों में भगवान उनके साथ रहेंगे, जैसा कि उन्होंने आज तक किया है।

और वह अपने वादों के बारे में बात करता है। इसलिए, गर्मजोशी भरे उपदेश तो हैं, लेकिन गंभीर चेतावनियाँ भी हैं। और यदि उन्होंने राष्ट्रों को बाहर नहीं निकाला, तो ऐसा कहा जा सकता है कि वे शरीर में कांटे होंगे।

विशेष रूप से श्लोक 13, उदाहरण के लिए, यह उल्लेख करता है कि आपके पक्षों में कोड़े और आपके शरीर में कांटे होंगे, एक जाल और जाल, इत्यादि। तो, फिर से, यह प्रभु का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहन होना चाहिए था। और यदि उन्होंने वास्तव में इसका पालन नहीं किया, तो उन्हें वास्तव में भूमि खोने का खतरा था।

श्लोक 15 और 16। और, निःसंदेह, हम देखते हैं कि सैकड़ों वर्षों के बाद, अंततः वे जीवित हो गए, जब उन्हें बंदी बनाकर बेबीलोन ले जाया गया। पद 9 में, यहोशू ने पुष्टि की कि कोई भी ऐसा नहीं बचा था जो इस्राएलियों का सामना करने में सक्षम हो।

और यह अन्य चीजों के साथ एक टुकड़ा है जो हमने देखा है। पद 10 में तो यहाँ तक कहा गया है, कि तुम में से एक मनुष्य हज़ारों को उड़ा देता है, क्योंकि यह तुम्हारा परमेश्वर यहोवा है जो तुम्हारे लिए लड़ता है, जैसा उसने वादा किया था। इसलिए, ईश्वर के इसराइल के योद्धा होने के विचार को बार-बार पढ़ा जाता है।

और फिर भी, अन्यत्र, ऐसे बहुत कम संकेत हैं कि आसपास अभी भी कनानी लोग हैं। और श्लोक 4, और श्लोक 7, उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने बचे हुए राष्ट्रों के लिए जनजातियों को विरासत दी है। तो, इस बिंदु पर, ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे अभी भी वहीं हैं।

पद 5, तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे साम्हने से पीछे धकेल देगा, और तेरे साम्हने से दूर कर देगा। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। तो, यह एक दिलचस्प छोटा सा परिप्रेक्ष्य है।

हमने उन छोटे-छोटे टाइम बमों के बारे में बात की है जिन्हें जनजातियाँ बाहर निकालने में सक्षम नहीं थीं। और, निःसंदेह, न्यायाधीशों की पुस्तक में, हम इसे साकार होते हुए देखते हैं। इस भाषण पर जोर देते हुए भूमि पर भगवान के स्वामित्व का उल्लेख किया गया है।

अंततः, निःसंदेह, भूमि परमेश्वर की थी, इस्राएल या कनानियों या किसी और की नहीं। यहाँ जोशुआ के अधिकांश शब्द प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उन चीजों को प्रतिध्वनित करते हैं जो हमने पहले पुस्तक में और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में भी पाई हैं। इसलिए, मूसा ने जो शब्द कहे थे, उन्हें यहोशू ने आगे बढ़ाया और यह विचारों को दोहराता है, उन्हें इस अध्याय में बार-बार एकत्रित करता है।

इसलिए, हम अध्याय में श्लोक 1 और 2 को प्रस्तावना के रूप में देखकर शुरू करते हैं। समय सीमा वास्तव में स्पष्ट नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह मूल घटनाओं के काफी समय बाद हुआ है।

इसमें कहा गया है, उस समय, यहोशू ने रूबेनियों और गादियों को बुलाया और उनसे कहा, लेकिन याद रखें कि हमारे पास अध्याय 13 में यहोशू की बढ़ती उम्र का संदर्भ था। उन्होंने लंबे समय तक युद्ध किया, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यह यहोशू के अंत में है जीवन और इस समय तक काफी समय व्यतीत हो चुका था। और फिर उपदेश श्लोक 3 से शुरू होते हैं। और हम श्लोक 3 से 8 तक की रूपरेखा में एक विभाजन कर सकते हैं, पहला उपदेश।

और फिर, वह उनसे पूछ रहा है, उनसे विश्वासयोग्य रहने का आग्रह कर रहा है। प्रभु ने तुम्हें विश्राम दिया है, पद 4, जैसा उसने वादा किया था। इसलिए, यहां की अधिकांश भाषा में, कानून में उस आज्ञा का पालन करने में सावधान रहें जो मूसा ने प्रभु की सेवा के लिए आपको आदेश दिया था, श्लोक 5, अपने ईश्वर से प्रेम करें, उसके सभी मार्गों पर चलें, उसकी आज्ञाओं का पालन करें, उससे जुड़े रहें, पूरे मन से उसकी सेवा करना।

वे सभी बातें वे बातें हैं जो मूसा ने कही हैं और वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं यहां विराम देने जा रहा हूँ और हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को पहले 11 अध्यायों में लगभग किसी भी पृष्ठ पर खोल सकते हैं और इस तरह की भाषा पा सकते हैं। लेकिन मैं शायद आपको इसे समझने में मदद करना चाहूंगा, कम से कम एक जगह पर, और वह व्यवस्थाविवरण अध्याय 10 में होगा।

तो, अपनी बाइबिल लें और उसे खोलें। याद रखें, व्यवस्थाविवरण मूसा के जीवन के अंत में है, पीछे मुड़कर देखने पर, वह दूसरी पीढ़ी से बात कर रहा है जो मिस्र से बाहर नहीं आई थी या

उससे पहले कम उम्र की थी। और इसलिए, मूसा अतीत में कानून की समीक्षा कर रहा है और आगे देखते हुए उनसे आग्रह कर रहा है।

और मूसा, व्यवस्थाविवरण 1 से 11 में स्वर बहुत देहाती है। मूसा एक प्रकार से पिछले 40 वर्षों और आज के प्रिय पादरी के रूप में बोल रहे हैं। यदि आपका कोई पादरी इतने लंबे समय के बाद सेवानिवृत्त हो रहा है, तो वे आमतौर पर अतीत की समीक्षा करेंगे और आगे की ओर देखेंगे।

मेरे अपने पादरी, कुछ साल पहले, जिस चर्च से मैं आज जुड़ा हूँ, लगभग 35 वर्षों के बाद सेवानिवृत्त हुए और उन्होंने पिछले छह महीने इस बात की समीक्षा करने में बिताए कि प्रभु ने क्या किया है और मंडली के भविष्य के लिए उनकी क्या उम्मीदें हैं। और यही हम अध्याय 1 से 11 में मूसा के शब्दों में देखते हैं। इसलिए, वे बहुत देहाती, बहुत भावुक हैं।

और जिन चीजों का मैंने यहां और वहां उल्लेख किया है उनमें से एक इनका पूरा विचार है, जिसे मैं कहूंगा, पुराने नियम के भगवान, नए नियम के भगवान के बीच झूठा द्वंद्व। और हम इस परिच्छेद में उन्हें टूटते हुए भी देखते हैं। इसलिए, जब मैंने ओल्ड टेस्टामेंट सर्वेक्षण पढ़ाया, तो कक्षा के पहले दिन, मैंने व्यवस्थाविवरण अध्याय 10 के इस अंश पर लगभग एक घंटा बिताया, पद 12 से शुरू होकर आगे तक।

और मैं विद्यार्थियों से इस अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ने के लिए कहता हूँ, और वास्तव में मैंने इसे उनके साथ पढ़ा। और मैं कहता हूँ, इस बात पर ध्यान दें कि इस अनुच्छेद में मूसा भगवान का कौन सा चित्र, किस प्रकार का चित्र चित्रित कर रहा है? क्या यह क्रोधित पुराने नियम का ईश्वर है जो बलिदान और कार्यों की मांग कर रहा है और सज़ा देने आदि के लिए तैयार है? या यह एक अलग तरह का भगवान है? और मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि यह स्पष्ट रूप से एक अलग भगवान है। इसलिए, हम यहां वह सब नहीं देखेंगे, लेकिन हम यहां कुछ अंशों को देखेंगे जो कि जोशुआ 23 के अंश की पूर्व-कल्पना करते हैं।

सो परमेश्वर मूसा के द्वारा कहता है, मूसा यहां व्यवस्थाविवरण 10 श्लोक 12 में कहता है, हे इस्राएल, तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से क्या चाहता है? अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसके मार्गों पर चलना, उससे प्रेम करना, अपने पूरे हृदय, अपनी सारी आत्मा से उसकी सेवा करना। यह लगभग शब्दशः वही है जो हम यहोशू 23 में पाते हैं। आज्ञाओं और विधियों का पालन करना जैसा कि मैं आज आपको आदेश दे रहा हूँ।

श्लोक 13 का अंत, आपकी भलाई के लिए। यह दिलचस्प है क्योंकि कभी-कभी हमारे नए नियम के परिप्रेक्ष्य से, पीछे मुड़कर देखने पर, कानून एक प्रकार की नकारात्मक चीज़ प्रतीत होती है। लेकिन यहाँ, और जैसा कि मैंने पहले भजन 119 जैसे भजन में उल्लेख किया है, कानून को एक बहुत अच्छी चीज़ के रूप में देखा जाता है, और यह उनकी भलाई के लिए है, न कि कोई नकारात्मक चीज़।

और फिर श्लोक 14 प्रभु के बारे में बात करता है, स्वर्ग और स्वर्ग का स्वर्ग, पृथ्वी और जो कुछ उसमें है वह सब तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का है। तो, सभी चीजें उसकी हैं। यह उन चीजों को फिर से चित्रित करता है जिन्हें हम यहोशू की पुस्तक में देखते हैं।

और फिर भी, तो वह उत्कृष्ट ईश्वर है। और पद 15, तौभी यहोवा ने तुम्हारे पुरखाओं पर अपना मन प्रेम रखा, और उनके पीछे उनकी सन्तान को चुन लिया। ध्यान दें, ऐसा नहीं है कि परमेश्वर लोगों से यह मांग करता है कि वे उससे प्रेम करें, पद 12, बल्कि उसने अपना हृदय उन पर प्रेम से स्थापित किया है।

तो, पुराने नियम का ईश्वर एक प्रेम करने वाला ईश्वर है, और वह अपने लोगों से प्रेम करता था। और यह न केवल इब्राहीम के वंशज थे बल्कि जैसा कि हमने कहा है, अन्य संदर्भों में, यह विदेशी भी है। और इसका उल्लेख यहाँ इस परिच्छेद में भी किया गया है।

श्लोक 16 में ध्यान दें, यह कहता है, इसलिए तुम्हारे हृदय की खाल का खतना किया गया है। कभी-कभी यह द्वंद्व बना दिया जाता है कि पुराने नियम में बाहरी खतना है, और नए नियम में केवल विश्वास की आवश्यकता है। परन्तु यह स्पष्ट कहता है, नहीं, हमने हृदय का खतना किया है।

मुझे नहीं लगता कि उन दिनों ओपन हार्ट सर्जरी होती थी। आंतरिक हृदय दृष्टिकोण के बारे में बात करना स्पष्ट रूप से लाक्षणिक है। और वह इसका हिस्सा है... और फिर यह फिर से भगवान की उत्कृष्टता के बारे में बात करता है, श्लोक 12 में, भगवान, आपका भगवान, भगवान का भगवान, भगवान का भगवान, महान, शक्तिशाली, अद्भुत भगवान है, जो पक्षपात नहीं करता, रिश्वत नहीं लेता।

हमने पहले राष्ट्रों के कई देवताओं और कनानियों के देवताओं के संदर्भ में उल्लेख किया है। और बाइबिल का भगवान कहता है, नहीं, मैं उन सभी का भगवान हूँ। और मैं उन सब का प्रभु हूँ।

उन पर मेरा आधिपत्य है। वे जैसे कुछ भी नहीं हैं। और हमने देखा कि राहब के शब्दों के संदर्भ में, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर, ऊपर स्वर्ग का, और नीचे पृथ्वी का परमेश्वर है।

मूलतः, कोई अन्य ईश्वर नहीं है। वह अनाथों के लिए न्याय क्रियान्वित करता है, पद 18। विधवा परदेशी से प्रेम करती है, उसे भोजन और वस्त्र देती है।

प्रवासी वह गेर, जीईआर है, जिसके बारे में हमने बात की है, वह विदेशी जिसने इज़राइल के ईश्वर, इज़राइल के विश्वास को अपनाया है। यह यहाँ एक समावेशी दृष्टिकोण है। पद 20, तू अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानना, उसकी उपासना करना, और उस से लिपटे रहना, उस से लिपटे रहना।

यही शब्द जोशुआ 23 में भी पाए जाते हैं। और मैं इसे एक छोटी सी कहानी के माध्यम से स्पष्ट करना चाहूंगा। जब मैं कोलंबिया में बड़ा हो रहा था, मैंने आठवीं कक्षा से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, और मैं आठवीं कक्षा का वेलोडिक्टोरियन बन गया।

और मैं लोगों को यह बताना पसंद करता हूँ। मैंने इसे अभी तक अपने बायोडाटा में नहीं डाला है, लेकिन मैं लोगों को यह बताता हूँ। लेकिन फिर, आप जानते हैं, मुझे ईमानदार होना होगा और कहना होगा, ठीक है, मैं था, कक्षा में केवल पांच लोग थे, इसलिए यह उतना बड़ा नहीं है जितना लगता है।

लेकिन फिर भी, समापनकर्ता के रूप में, मुझे उस समय, 60 के दशक में, एक बहुत अच्छा पार्कर पेन मिला था। और मैंने उस कलम को महत्व दिया। लेकिन कोलंबिया में मेरे कुछ दोस्त थे जिनके पिछवाड़े में पालतू जानवर के रूप में एक बंदर था।

वह अपनी कमर के चारों ओर एक तार से बंधा हुआ था जो शायद 15, या 20 फीट लंबा था। और वह कपड़े की रस्सी से ऊपर-नीचे दौड़ सकता था, जहां वह बंधी हुई थी, और वह पेड़ पर चढ़ सकता था, और आप जानते हैं, उसके पास कुछ स्वतंत्रता थी। इसलिए मैं वहां वापस जाता और उसे सहलाता और कभी-कभी उसके साथ खेलता।

और एक बार मैं वहां था, और उसने मेरी जेब में हाथ डाला और मेरी कलम पकड़ ली। और वह पेड़ की चोटी पर भाग गया और नीचे नहीं उतरा। और वो मेरा पेन चबा रहा था और उससे खेल रहा था।

और इसलिए, आप जानते हैं, मैंने उसे वापस नीचे खींच लिया और अंततः उसे अपने पास ले आया। और मैंने उसके हाथ से कलम छीनने की कोशिश की, लेकिन उसने नहीं छोड़ा। और आखिरकार मुझे यह पेन उसके हाथ से छुड़ाने में लगभग एक मिनट लग गया।

और जब उसने ऐसा किया, तो सब कुछ नष्ट हो गया, और मेरी खूबसूरत वेलेडिक्टोरियन कलम बर्बाद हो गई, ऐसा लग रहा था। लेकिन मुद्दा यह है कि, जब भी मैं प्रभु से जुड़े रहने या दृढ़ता से पकड़े रहने के शब्दों के बारे में सोचता हूँ तो मुझे वह कहानी याद आती है। वह शब्द प्रयोग किया जाता है, वह शब्द प्रयोग किया जाता है, वह शब्द है दबक , DABAQ।

और यह संज्ञा डेबेक से संबंधित है , जो गोंद के लिए शब्द है। और गोंद चीजों को एक साथ बांधता है, चिपकता है। तो यह उत्पत्ति 2 में इस्तेमाल किया गया शब्द है जब भगवान कहते हैं, इस कारण से, एक पुरुष और एक महिला, एक पुरुष अपने पिता और मां को छोड़ देगा और अपनी पत्नी, दबक , से चिपक जाएगा।

तो, वैवाहिक मिलन वह विचार है। और बार-बार इसका उपयोग आध्यात्मिक अर्थ में भगवान, अपने ईश्वर से जुड़े रहने के लिए किया जाता है। और यहाँ यही शब्द है।

याद रखें, बंदर और कलम, उसे याद करने का तरीका। तो, ये सभी बातें उस तरह की बातों की पृष्ठभूमि में हैं जो जोश यहां अपने अंतिम संबोधन में, अध्याय 23 में अपने अंतिम संबोधन के आगे कह रहे थे। इसलिए, मैं अब अध्याय 23 पर वापस जाऊंगा और कुछ और बातें कहूंगा।

श्लोक 11, अध्याय 23 को देखो, इसलिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करने में बहुत सावधान रहो। यदि तू पीछे मुड़कर बचे हुए राष्ट्रों के बचे हुए लोगों से लिपट जाएगा, और उन से विवाह कर लेगा, तो तेरा परमेश्वर यहोवा, पद 13, तेरे आगे के निवासियों को तेरे साम्हने से न निकालेगा। तो, आदर्श यह है कि आप प्रभु से जुड़े रहें, लेकिन यदि आप इन देवताओं और अन्य राष्ट्रों की महिलाओं से चिपके रहते हैं, उनके साथ अंतर्जातीय विवाह करते हैं और इसी तरह, तो भगवान उन्हें बाहर नहीं निकालेंगे।

वे अब भी फंदा और जाल बने रहेंगे। तो ध्यान दें, वहां जो निहित है वह यह है कि अभी भी ऐसे राष्ट्र शेष हैं जिन्हें बाहर निकाला जाना है। इसलिए पुस्तक के अंत तक भी, कार्य पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ है।

परन्तु पद 14, यहोशू कहता है, मैं सारी पृथ्वी के मार्ग पर चलने पर हूँ, और तुम सब अपने अपने मन और मन में जानते हो, कि जितने अच्छे कामों के विषय में तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने वचन दिया था, उन में से एक भी शब्द अधूरा नहीं रहा। आप। निस्संदेह, यह अध्याय 21, श्लोक 25, श्लोक 45 को प्रतिध्वनित करता है। आपके लिए सभी चीजें पूरी हो गई हैं, उनमें से एक भी विफल नहीं हुई है।

वह शब्द वहाँ है, फिर से, कुछ भी नहीं गिरा है। तो यह जोशुआ की ओर से एक बहुत ही व्यक्तिगत संबोधन है, बहुत भावुक। मैं कहूँगा कि यह उन चीजों की प्रतिध्वनि है जो मूसा ने उसी स्वर और भावना में कही थीं।

और हम अंतिम श्लोक को देखकर इसे समाप्त करेंगे। और यह चेतावनियों के बारे में बात करता है। यदि तुम विमुख हो रहे हो, तो परमेश्वर तुम्हारे विरुद्ध क्रोधित और जल उठेगा।

उस अच्छी भूमि से जो उस ने तुम्हें दी है, तुम शीघ्र नाश हो जाओगे। तो इसकी चेतावनी और चेतावनी है। यह उस तरीके से दिलचस्प है जिस तरह से हिब्रू बाइबिल का निर्माण किया गया है।

हमने दूसरे खंड में उल्लेख किया है कि हमारे पास कानून, टोरा, पेंटाटेच और मूसा की पहली पांच पुस्तकें हैं। और फिर हमारे पास और 12 में भविष्यवक्ता हैं। और पहली चार पुस्तकें, यहोशू, न्यायाधीश, शमूएल और राजा, पूर्व भविष्यवक्ता कहलाते हैं।

और यह दिलचस्प है कि पहली किताब में, जोशुआ, इज़राइल भूमि पर उतर रहा है, वहां बस रहा है। अंतिम पुस्तक, 2 किंग्स में, 2 किंग्स के अंतिम अध्याय में, इज़राइल को उसी भूमि से छीना जा रहा है। तो, उस विस्तार में, यहोशू, न्यायाधीशों, 1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजाओं, हमारे पास देश में इस्राएल के जीवन का रिकॉर्ड है।

यह सिर्फ इतिहास के लिए एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है। यह एक व्याख्यात्मक इतिहास है जो दिखाता है कि कैसे भगवान अपने लोगों के माध्यम से, कभी-कभी अपने लोगों के बावजूद भी काम कर रहे हैं। और दुख की बात है कि, प्रक्षेपवक्र ज्यादातर नैतिक और आध्यात्मिक रूप से नीचे की ओर है।

लेकिन यही हो रहा है. तो यहाँ हमारे पास ज़मीन पर बसने और चेतावनी है कि अगर तुम वफादार नहीं रहोगे, तो तुम्हें ज़मीन से छीन लिया जाएगा। यह जोशुआ के पहले भाषण का अंत है।

तो अब हम अध्याय 24 की ओर मुड़ते हैं, जो दूसरा भाषण है। और ऐसा प्रतीत होता है कि यह शीलो में नहीं, शकेम में एक नए स्थान पर है, पद 1। वह पुरनियों और सभी लोगों को बुलाता है और उनसे बात करना शुरू करता है। और पहले 13 छंद, एक तरह से अतीत की समीक्षा है।

यहाँ वही है जो हुआ है और यहाँ वह है जो भगवान ने किया है। तो यह इब्राहीम के पिता तेरह से शुरू होता है, पद 2, और कहता है कि उन्होंने अन्य देवताओं की सेवा की, पद 2 का अंत। इसलिए, सैकड़ों साल पहले, जब भगवान ने इब्राहीम को कनान लाने के लिए मेसोपोटामिया से बुलाया, तो ऐसा प्रतीत होता है कि उसका परिवार अभी भी अन्य देवताओं की सेवा कर रहा था। वे सच्चे ईश्वर को उस तरह से नहीं जानते थे जैसे अंततः वे उसे जान पाये।

इसलिये मैं ने तेरे पिता इब्राहीम को महानद के पार से ले जाकर कनान देश में पहुंचाया, और उसके वंश को बहुत किया, और इसहाक, और याकूब, इत्यादि उसे दिया। श्लोक 6 और निम्नलिखित में उन्हें लाल सागर के माध्यम से मिस्र से बाहर लाने और उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में बताया गया है। और पद 8 इस बारे में बात करता है, कि मैं तुम्हें एमोरियों अर्थात् कनानियों के देश में ले आया, जो यरदन के उस पार रहते थे, जिस से तुम लड़े थे।

और तब बालाक उठ खड़ा हुआ। हमने यह कहानी गिनती, अध्याय 22 से 24 में पढ़ी। जंगल में, मोआब का राजा उठा और उनके विरुद्ध लड़ा।

तो, यह एक प्रकार का है और फिर जेरिको का उल्लेख है। श्लोक 12, इसमें हॉर्नेट का उल्लेख है। मैं ने तेरे आगे बर्रों को भेजा, जिस ने एमोरियोंके दो राजाओंको तेरे साम्हने से निकाल दिया।

यह सीहोन और ओग है। वे अभी भी जंगल में हैं, संख्याओं की किताब। मुझे लगता है कि हॉर्नेट कौन था या क्या था, इसकी व्याख्या करना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि शायद वास्तव में हॉर्नेट्स की भीड़ थी। दूसरों ने सुझाव दिया है, नहीं, शायद यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, आप उस प्रकार की जीत चाहते हैं जो तब होगी जब आपकी ओर से लड़ने वाले हॉर्नेट का एक बैंड होगा।

और पद 13 के अनुसार मैं ने तुम्हें वह देश दिया, जिस में तुम ने कुछ परिश्रम नहीं किया, और ऐसे नगर दिए जिन्हें तुम ने नहीं बसाया, और तुम उन में रहने लगे। तुम अंगूर के बागों और जैतून के बागों का फल खाते हो जो तुमने नहीं लगाया, इत्यादि। मैं आपको बस उस अनुच्छेद की याद दिलाना चाहता हूँ जिसे हमने पहले व्यवस्थाविवरण अध्याय 6, श्लोक 10 और 11 में देखा था, जो उसी का पूर्वरूपण है।

परमेश्वर कहते हैं, मैं तुम्हें ऐसे घर दूंगा जो तुमने नहीं बनाए, हौद जो तुमने नहीं खोदे, अंगूर के बगीचे जो तुमने नहीं लगाए, इत्यादि। और वह उनके लिए भगवान का उपहार था। उन्हें

कनानियों को बाहर निकालना था, लेकिन वे मूलतः अक्षुण्ण भूमि प्राप्त करने जा रहे थे, और यह उसी की पुनरावृत्ति है, जिसमें कहा गया है, मैंने आपके लिए यह किया है।

तो, छंद 14 से 24 में, हमारे पास एक खंड है जिसे हम वाचा की पुष्टि कह सकते हैं, और वे यहोशू द्वारा उन्हें उपदेश देते हुए शुरू करते हैं, कहते हैं, इसलिए प्रभु से डरो, ईमानदारी और विश्वासयोग्यता से उसकी सेवा करो, उन देवताओं को दूर करो जिनकी तुम्हारे पिता ने सेवा की थी, और जल्द ही। कई विद्वानों ने इस अध्याय को, विशेष रूप से अध्याय के इस भाग को, एक निश्चित पैटर्न के अनुसरण के रूप में देखा है। प्राचीन निकट पूर्व में आम तौर पर, राष्ट्रों और समझौतों के बीच संधियाँ करने के कुछ पैटर्न थे, और उन्हें वाचा संधियाँ कहा जाता था, और वे कुछ निश्चित पैटर्न का पालन करते थे, और वह अध्याय कुछ हद तक उसी का पालन करता प्रतीत होता है।

कुछ विद्वान तो यहां तक कह गए हैं कि यह अध्याय एक संविदा संधि प्रपत्र का पाठ है। मेरा विचार है कि नहीं, एक अनुबंध बनाया जा रहा है जो इस अध्याय की पृष्ठभूमि में है, लेकिन यह अध्याय एक कथात्मक अध्याय है, जो उस कहानी को बता रहा है और इसे एक बड़ी कहानी में शामिल कर रहा है। तो यह किसी अनुबंध का आधिकारिक कानूनी पाठ नहीं है, यह उसके बारे में एक कहानी है।

लेकिन देखो यह श्लोक 15 में क्या कहता है। यह वास्तव में एक उल्लेखनीय बात है। श्लोक दो, याद रखें, यह कहता है कि इब्राहीम और अन्य लोगों ने अन्य देवताओं की सेवा की थी, और श्लोक 14 कहता है, उन देवताओं को दूर करो जिनकी तुम्हारे पिता ने नदी के पार सेवा की थी।

दूसरे शब्दों में, मेसोपोटामिया में, हमारे यहां इजराइल है, यहां पर असीरिया, बेबीलोन और नदी की भूमि है, महान नदी फरात नदी थी, और यहीं से इब्राहीम और उसका परिवार आया था, और जाहिर तौर पर वे अन्य लोगों की सेवा कर रहे थे नदी से परे देवता. सो, यहोशू अब कह रहा है, उन देवताओं को दूर कर दो, जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा, इब्राहीम आदि ने महानद के उस पार, नंबर एक, की थी। और नंबर दो, और मिस्र में, तो जाहिर तौर पर बाद के वर्षों में जब वे मिस्र में निर्वासन में थे, उन्होंने मिस्र के देवताओं की भी सेवा की।

तो यह एक उल्लेखनीय कथन है। दो चीजों के लिए, एक, हम देखते हैं कि यह पुष्टि कि इब्राहीम और उसका परिवार एक ऐसे परिवेश से आया था, एक ऐसे संदर्भ से आया था जिसमें वे अन्य देवताओं की पूजा कर रहे थे जब तक कि उन्हें सच्चे ईश्वर के बारे में पता नहीं चला। लेकिन फिर दूसरी बात, वास्तव में हमारे पास पहले इसका कोई सीधा संदर्भ नहीं है, लेकिन जाहिरा तौर पर इजराइल, जब वे मिस्र में थे, मिस्र के कुछ देवी-देवताओं को भी गले लगा रहे थे, और यह उन्हें बहुत अच्छी रोशनी में नहीं दिखाता है।

लेकिन चौंकाने वाली बात यह है कि ऐसा लगता है कि वे अभी भी ऐसा कर रहे हैं। यहोशू ने क्यों कहा, उन देवताओं को दूर कर दो जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा मिस्र में, नदी के उस पार, दूसरे नंबर पर, करते थे? वह ऐसा क्यों कहेंगे जब तक कि वे वास्तव में ऐसा नहीं कर रहे थे? तो, इस पुस्तक में जहां विश्वासयोग्यता का विषय है, और भगवान के सभी वादे पूरे हो रहे हैं, और सभी

इस्राएलियों के लिए सब कुछ काम कर रहा है और ठीक से हो रहा है, आपके पास मतभेद का यह नोट है जहां ऐसा प्रतीत होता है कि, हम्म, वहां अभी भी काम है किया जाना चाहिए, न केवल भूमि पर विजय पाने के लिए बल्कि मूल रूप से बुतपरस्त पूजा को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए भी।

तो यह एक किताब में एक चौंकाने वाला बयान है जो विश्वास और होने वाली सभी सकारात्मक चीजों पर इतना जोर देता है। तो, श्लोक 15, यहोशू ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा, ठीक है, यदि तुम्हें यह पसंद नहीं है, यदि यहोवा की सेवा करना तुम्हारी दृष्टि में बुरा है, तो आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे, क्या वे देवता हैं जिनकी तुम्हारे पुरखाओं ने सेवा की थी नदी के पार के क्षेत्र में, दूसरे शब्दों में, फिर से, इब्राहीम और पहले के देवता, या एमोरियों के देवता जिनकी भूमि पर आप रहते हैं। तो अब देवताओं का एक तीसरा समूह है, कनानियों के देवता, मेसोपोटामिया में नदी पार के देवता, मिस्र के देवता, कनानियों के देवता।

तुम जिसकी चाहो सेवा कर सकते हो, परन्तु श्लोक 15, श्लोक 15 का अंत, परन्तु जहाँ तक मेरे घर में मेरी बात है, हम प्रभु की सेवा करेंगे। किसी को उन शब्दों के साथ एक पट्टिका बनानी चाहिए। यह शायद खूब बिकेगा।

आप में से अधिकांश लोग जानते हैं कि यह एक बहुत लोकप्रिय भावना और कथन है, और आप इसे घरों और भोजन कक्षों या बैठक कक्षों में पाते हैं, और यह एक अद्भुत बात है। लेकिन मुझे लगता है कि आज ज्यादातर लोग जिनके घरों में ये बातें हैं, वे यहां के संदर्भ को नहीं समझते या महसूस नहीं करते, और यह संदर्भ एक चुनौती है। यहोशू ने उनके सामने दो रास्ते रखे, मेसोपोटामिया या मिस्र या कनान के इन अन्य देवी-देवताओं का अनुसरण करें, यदि आप उन्हें चाहते हैं, तो यह मेरी पसंद है, और मैं प्रभु का अनुसरण करना चुनूंगा।

अब, अपने श्रेय के लिए, लोगों ने यह कहकर जवाब दिया, नहीं, हम ऐसा नहीं करने जा रहे हैं। हम प्रभु का अनुसरण करने जा रहे हैं। अब तक, श्लोक 16, यह हमसे दूर है कि हम प्रभु को त्याग दें और अन्य देवताओं की सेवा करें।

क्योंकि वह हमारा प्रभु, हमारा परमेश्वर है, जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, इत्यादि। तो, श्लोक 16 से 18 में, वे सभी सही चीजों की पुष्टि कर रहे हैं, और वे यहोशू से सहमत हैं, इसके बावजूद कि श्लोक 14 और 15 में ऐसा प्रतीत होता है कि वे ऐसा नहीं कर रहे थे। तो, श्लोक 14 और 15 में क्या हो रहा है, इसके वर्णन और वे क्या कह रहे हैं, के बीच थोड़ा सा मतभेद है।

तो, मुझे ऐसा लगता है कि जोशुआ की प्रतिक्रिया एक प्रकार से जागृति की घंटी है। श्लोक 19 में, वह कुछ चौंकाने वाली बात कहता है। वह कहता है, तुम यहोवा की सेवा न कर सकोगे, क्योंकि वह पवित्र परमेश्वर है, वह ईर्ष्यालु परमेश्वर है, और वह तुम्हारे अपराध या पाप क्षमा न करेगा।

तो यहाँ लोगों ने, जाहिरा तौर पर, उनमें से कम से कम कुछ ने अन्य देवी-देवताओं की गुप्त, निजी पूजा बनाए रखी है। वे सार्वजनिक रूप से पुष्टि कर रहे हैं कि वे प्रभु का अनुसरण करने जा रहे हैं, लेकिन यहोशू कहता है, नहीं, आप ऐसा करने में सक्षम नहीं होंगे, और ईश्वर आपके अपराधों को

माफ नहीं करेगा। यह बहुत कठोर बयान लगता है, और एक टिप्पणीकार ने इसे पूरे पुराने नियम में सबसे चौकाने वाला बयान कहा है।

तो, हम उसके साथ क्या करें? ठीक है, अपने आप में, अगर हम कविता को मनमाने ढंग से चुनते हैं और कहते हैं, इसे पढ़ें, तो हम निष्कर्ष निकालेंगे कि यह एक कठोर भगवान है, वह माफ नहीं करेगा, और बस इतना ही, लोगों के सामने यह कहना कि वे ऐसा करना चाहते हैं, और वे प्रभु को गले लगाने की इच्छा की पुष्टि के सामने उनका अनुसरण करना चाहते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह एक चेतावनी है क्योंकि उन्होंने स्पष्ट रूप से उन देवी-देवताओं को अभी तक नहीं छोड़ा है, लेकिन संदर्भ में, श्लोक 20 भी श्लोक 21 के साथ जाता है। मुझे क्षमा करें, 19 श्लोक 20 के साथ जाता है क्योंकि यह चलता रहता है कहने का तात्पर्य यह है, कि यदि तुम यहोवा को त्याग कर पराये देवताओं की उपासना करोगे, तो वह फिरेगा, और तुम्हारी हानि करेगा, और कोई भलाई न करके तुम्हें नष्ट कर देगा।

तो, इसका दूसरा पक्ष यह प्रतीत होता है, कि यदि आप उसे नहीं त्यागेंगे, तो वह आपसे दूर नहीं जायेगा, वह उद्धार करेगा, और वह बचाएगा। तो, ऐसा प्रतीत होता है कि यह इतना पूर्ण कथन नहीं है कि वे कभी भी ऐसा नहीं कर सकते हैं, उनमें कभी भी प्रभु का अनुसरण करने की क्षमता नहीं है, यह अधिक जोशुआ की चेतावनी है जो कह रही है, बेहतर होगा कि आप सावधान रहें, और आपको उनसे छुटकारा पाना चाहिए देवताओं और भगवान की ओर मुड़ें, और फिर यदि आप नहीं करते हैं, तो वह माफ नहीं करेगा, लेकिन यदि आप ऐसा करते हैं, तो उप-पाठ स्पष्ट रूप से है कि वह माफ कर देगा, वह माफ कर देगा। तो वे श्लोक 21 में फिर से विरोध करते हैं, नहीं, हम प्रभु की सेवा करने जा रहे हैं, और इसलिए यहोशू कहता है, ठीक है, तुम गवाह हो, तुमने प्रभु को उसकी सेवा करने के लिए चुना है, और उन्होंने कहा, हम गवाह हैं, श्लोक 23 .

तो, श्लोक 19 में उस कठोर कथन में नरमी है। तो, वह फिर से कहता है, फिर उन विदेशी देवताओं को दूर करो जो तुम्हारे बीच में हैं, अपने हृदय को प्रभु की ओर झुकाओ, और उन्होंने कहा, हाँ, हम यह करेंगे, और हम उसकी बात मानेंगे। तो यह इस प्रतिबद्धता और अनुबंध का मूल है।

और फिर श्लोक 25 से 27 इस पर मुहर लगाने, पुष्टि करने, लपेटने, पूरे वाक्य को बांधने के समान हैं, क्योंकि अब श्लोक 25 में, यह कहता है, यहोशू ने उस दिन लोगों के साथ एक वाचा बाँधी, रखो शकेम में उनके लिये विधि और नियम बनाए। उसने ये शब्द परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में लिखे। बस एक अनुस्मारक, दूसरे खंड में, हमने इज़राइल के लिए आदर्श राजा के निर्देशों के बारे में बात की थी, व्यवस्थाविवरण 17, और राजा के लिए सफलता की कुंजी यह थी कि उसे ईश्वर के वचन में निहित होना था।

और यह व्यवस्थाविवरण 17, श्लोक 19 में कहता है, यह कहता है कि राजा को व्यवस्था की पुस्तक की एक प्रति अपने लिये लिखनी होगी और उसे अपने हृदय पर रखना होगा, इत्यादि। यहां, याद रखें, हमने एक और संदर्भ का उल्लेख किया है, यहोशू 1, यहोशू को दिए गए परमेश्वर के आदेश के शब्द व्यवस्थाविवरण 17 के शब्दों के समान हैं। यहोशू निश्चित रूप से एक राजा नहीं है, लेकिन इस पुस्तक में ईश्वरीय नेतृत्व के सिद्धांत निश्चित रूप से मौजूद हैं।

और यहाँ, हमारे पास यहोशू एक और निषेधाज्ञा का पालन कर रहा है जिसे हम राजा के बारे में व्यवस्थाविवरण 17 में देखते हैं। अर्थात्, वह परमेश्वर के कानून की पुस्तक में शब्दों को लिख रहा है। अतः वह एक धर्मात्मा नेता की भूमिका में कार्य कर रहे हैं।

एक बड़ा पत्थर लेता है, और उसे उस तारबीन के नीचे जो यहोवा के पवित्रस्थान के पास है खड़ा करता है। और यहोशू ने लोगों से कहा, देखो, यह पत्थर हमारे विरुद्ध गवाही देगा, क्योंकि यहोवा ने जो बातें उस ने हम से कही थीं, वे सब इस ने सुनी हैं। इस कारण वह हमारे विरुद्ध गवाही देगा, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के साथ विश्वासघात करो।

इसलिये उस ने लोगोंको विदा किया, और सब अपने अपने निज भाग को चले गए। वह शब्द फिर से है। और यह किताब के अंतिम खंड की एक तरह की गठजोड़ है।

तो, यह, फिर से, एक गठजोड़ है जो सही लगता है, ऐसा लगता है, फिर से, हर कोई, सब कुछ क्लिक कर रहा है, सब कुछ सही काम कर रहा है। लेकिन इन विदेशी देवताओं और इज़राइल की असमर्थता के बारे में ये असंगत टिप्पणियाँ हैं, जब तक कि वे उन बातों को स्वीकार नहीं करते हैं, जब तक कि वे उन चीजों को स्वीकार नहीं करते हैं, जब तक कि वे उन देवताओं को दूर नहीं कर देते हैं, तब तक वे अपने वादों को पूरा नहीं कर पाते हैं। तो, यह भी किताब के अंत में एक चौकाने वाला रहस्योद्घाटन है क्योंकि उन्होंने आकान के पाप के कारण ऐ में हार का अनुभव किया था और आप जानते हैं, उन चीजों को नहीं ले रहे थे जो उसे नहीं लेनी चाहिए थी।

यहाँ, ऐसा प्रतीत होता है कि लोग अभी भी, कम से कम, राष्ट्रों के कुछ देवताओं को बनाए हुए हैं जिनकी उन्हें पूजा नहीं करनी चाहिए। अंत में, पुस्तक का अंत उस चीज़ के साथ होता है जिसे हम तीन मृत्यु सूचनाएँ कह सकते हैं। और पहला यहोशू के साथ है।

तो इन बातों के बाद पद 29, इन बातों के बाद यहोशू, जो नून का पुत्र, और यहोवा का दास, मर गया। यह पहली बार है कि यहोशू को प्रभु का सेवक कहा गया है। वह 110 साल के हैं।

एप्रैम के पहाड़ी देश के तिमहसेरा नामक नगर में, जो निज भाग है, मिट्टी दी।

पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में एक दिलचस्प छोटा सा जोड़। यह यहां हिब्रू में नहीं है, यह हमारी अंग्रेजी बाइबिल में नहीं है, लेकिन, और हम नहीं जानते कि क्या यह वास्तव में मूल रूप से पवित्रशास्त्र के प्रेरित पाठ का हिस्सा है, लेकिन यह एक दिलचस्प जिज्ञासा है। ग्रीक अनुवाद श्लोक 29 में इस बिंदु पर जोड़ता है कि यहोशू ठीक है, मुझे पीछे जाने दो, अध्याय 20, और 21 के अंत की ओर मुड़ें। और श्लोक 42, जोशुआ 21, श्लोक 42 के बाद, वहाँ एक छोटा सा नोटिस है, एक और ध्यान दें कि ग्रीक अनुवाद में जोड़ा गया है जो हिब्रू या अंग्रेजी में नहीं है, यह इस आशय का कुछ कहता है कि यहोशू ने दो चकमक चाकू ले लिए जिनका उपयोग उसने अध्याय पांच में लोगों का खतना करने के लिए किया था और उन्हें अपने साथ अपने गृहनगर ले गया।, तिमाह-सेराह। यह यहां पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में जोशुआ 21, श्लोक 42 में पाया गया है।

अब पुस्तक के अंत में, हमारे पास श्लोक 29 के बाद, श्लोक 30 के बाद एक दूसरा जोड़ भी है, जहां यह कहा गया है, श्लोक 30 में ध्यान दें कि तिमाह-सेराह, उनके अपने गृहनगर का उल्लेख है। और इसमें कहा गया है कि यहोशू को उन दो चकमक चाकुओं के साथ दफनाया गया था जिन्हें उसने बचाकर रखा था। तो, किताब के माध्यम से एक दिलचस्प तरह का एक छोटा सा विषय है, आप जानते हैं, यहोशू ने चकमक चाकू से लोगों का खतना किया था।

उसने अपने लिए चाकू बनाए और फिर अध्याय पाँच में लोगों का खतना किया। फिर वह उन्हें अपने गृहनगर ले जाता है, कम से कम ग्रीक अनुवाद में, उन्हें रखता है, और फिर उसे उनके साथ दफनाया जाता है। यह वास्तव में सच है या नहीं, हम नहीं जानते, लेकिन ग्रीक अनुवाद में यह एक दिलचस्प छोटा उप-विषय है।

फ्लिंट एक बहुत नुकीला पत्थर था, और आप इससे बहुत आसानी से कट सकते हैं, इसलिए लोगों का खतना करने के लिए यह एक अच्छी बात होती। और मैंने अध्याय पाँच की चर्चा में उल्लेख किया है कि इस तरह की कहानी निर्गमन अध्याय चार में मूसा और सिप्पोरा और उनके बेटे के बारे में है, जहाँ प्रभु ने मूसा को मारने की कोशिश की थी। सिप्पोरा अपने पैरों पर तेज थी, उसने अपने बेटे का खतना किया, चकमक पत्थर का एक टुकड़ा लिया और ऐसा किया, और फिर भगवान ने मूसा को बचा लिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि मूसा, जो जल्द ही देश का महान नेता बनने वाला था, ने ईश्वर के साथ रिश्ते की एक बुनियादी आवश्यकता, अर्थात् खतना, का पालन नहीं किया था। उन्होंने अपने बेटे का खतना नहीं कराया था, और मुद्दा यह प्रतीत होता है कि महान नेता भी भगवान की आज्ञाओं और भगवान के शब्दों का पालन करने से मुक्त नहीं थे। विडंबना यह है कि जब आप यहोशू की पुस्तक को देखते हैं तो मुझे ऐसा लगता है, हमारे पास जंगल में ऐसे लोगों की एक पूरी पीढ़ी है जिनका खतना नहीं हुआ है, और यहोशू को यह करना पड़ता है, अध्याय पांच।

लेकिन मूसा ने यह सुनिश्चित क्यों नहीं किया कि वे ऐसा करेंगे? जंगल में कभी-कभार रुकने और ठीक होने के लिए काफी समय होता। लोगों का खतना करने में असफल होने के कारण मूसा को अपने जीवन के आरंभ में मृत्यु के निकट का अनुभव हुआ था, और फिर भी वह कुछ ऐसा था जिसका उसने पालन नहीं किया। लेकिन फिर भी, जोशुआ की किताब के अंत में यह एक छोटा सा बिंदु है।

कम से कम ग्रीक अनुवाद के अनुसार, वह स्वयं चकमक चाकुओं से दफनाया गया है। इसके बाद, हम श्लोक 31 को देख सकते हैं, और यहोशू के बारे में अंतिम बात यह कहती है कि इस्राएल ने यहोशू के जीवन भर और उन पुरनियों के जीवन भर, जो यहोशू के जीवित रहने के बाद भी यहोवा की सेवा करते रहे और यहोवा ने इस्राएल के लिए जो काम किया था, वे सब जानते थे, उन्होंने यहोवा की सेवा की। . तो, एक स्तर पर, यह वास्तव में एक अच्छा बयान है।

अब हम अंत में हैं। यह प्रश्न है। यहोशू लोगों को प्रभु की सेवा करने के लिए चुनौती दे रहा है, और पद 29, और पद 31 कहते हैं कि उन्होंने ऐसा किया।

वे यहोशू के जीवन भर और पुरनियों के जीवन भर यहोवा की सेवा करते रहे। जो नहीं कहा गया, वह आज तक नहीं कहा गया। जोशुआ की किताब में ऐसे कई स्थान हैं जो आज तक घटित होने की बात करते हैं।

ऐसा महसूस होता है कि यह कई वर्षों बाद की बात है, कभी-कभी तो लगभग डेविड या शाऊल या सैमुअल के समय तक भी। और इसलिए, हो सकता है कि यह अघोषित हो, हो सकता है कि यह मौन का तर्क हो, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वहां एक संकेत भी है कि यहोशू के साथ एक समस्या है कि उसने लोगों का नेतृत्व इस तरह से नहीं किया जिससे यह हमेशा के लिए या बहुत लंबे समय तक सुनिश्चित हो सके। पूरे पेंटाटेच में जोशुआ के उत्तराधिकारी के लिए जोशुआ के लिए कोई प्रावधान नहीं है।

हमने बार-बार यहोशू को मूसा का उत्तराधिकारी बनने के लिए तैयार और तैयार किया है, और फिर यहोशू 1 यह कहकर शुरू करता है कि मूसा की मृत्यु के बाद, उसने प्रभु की सेवा की, और प्रभु ने यहोशू से बात की। यदि आप केवल एक मिनट के लिए पृष्ठ पलटते हैं, तो यह ठीक उसी तरह से शुरू होता है जैसे हिब्रू निर्माण में, जोशुआ की मृत्यु के बाद, लेकिन यह नहीं बताता कि अगला नेता कौन है। और इसलिए, यह कहने का तरीका भी सही नहीं हो सकता है कि जोशुआ के नेतृत्व में कुछ खामियां थीं क्योंकि अगले नेता का कोई समूह नहीं था, और हम न्यायाधीशों की पुस्तक में इसके परिणाम देखते हैं।

वहां कोई केंद्रीकृत नेता नहीं है और चीजें अस्त-व्यस्त हो गई हैं, हर कोई अपनी नजरों में सही काम कर रहा है। तो, शायद एक सूक्ष्म बिंदु, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि, पाठ जानबूझकर हमें बता रहा है कि यह कुछ समय तक चला, लेकिन तब तक नहीं जब तक यह हो सकता था या होना चाहिए था। दूसरी दफ़न सूचना वास्तव में दफ़नाने की सूचना नहीं है क्योंकि यूसुफ को मरे हुए कई साल हो गए हैं, लेकिन वे यूसुफ की हड्डियों को मिस्र से लाए थे और उन्होंने उन्हें शेकेम में दफनाया था।

यह उत्पत्ति अध्याय 50 पर वापस जाता है, और हम आपको यह समझने के लिए कि यहाँ क्या हो रहा है, बस उस पर आँगे। याद रखें, जोसेफ महान नायक है, उत्पत्ति के अंतिम भाग में, और उत्पत्ति के श्लोक 25 में, अंतिम श्लोक के अगले में, जोसेफ, जैसा कि वह सभी मांस के रास्ते पर जाने के लिए तैयार है, अपने भाइयों और से एक वादा मांगता है पुत्र, उत्पत्ति 50, पद 25। तब यूसुफ ने इस्राएल के पुत्रोंको यह कहकर शपथ खिलाई, कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम मेरी हड्डियां यहां से ले जाओगे।

इसलिए, मैं मिस्र में दफन नहीं होना चाहता। मैं वापस कनान देश में दफनाया जाना चाहता हूँ। और निर्गमन 13 में एक बहुत ही दिलचस्प प्रसंग है, जब यूसुफ के सैकड़ों साल बाद, मूसा के अधीन, इज़राइल अब मिस्र छोड़ रहा है।

आयत 19 में, जब वे जा रहे थे, कहता है, मूसा यूसुफ की हड्डियों को अपने साथ ले गया, परन्तु यूसुफ ने इस्राएल के पुत्रों की बात मानी, और गंभीरता से शपथ खाकर कहा, परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम मेरी हड्डियों को यहां से अपने साथ ले जाओगे। . तो, निर्गमन 13,

श्लोक 19, उत्पत्ति 50 से उस सूत्र को जारी रखता है। और अब, यहोशू की पुस्तक के लेखन में, यहोशू के जीवन के अंत में, हम लोगों को उस छोटे से संबंध में वफादार होते हुए देखते हैं, लेकिन यह जारी है और यह भूमि के महत्व को दर्शाता है, यह वादा निभाने के महत्व को दर्शाता है, यह आज्ञाकारिता के महत्व को दर्शाता है, और यह एक दिलचस्प विषय है जो हमें उन तीन अलग-अलग पुस्तकों के माध्यम से मिलता है।

जोसेफ की हड्डियाँ उसकी अपनी मातृभूमि में दफन हैं, एक जगह जिसे सैकड़ों साल पहले खरीदा गया था। और फिर अंत में, श्लोक 33 में, यह कहता है, हारून का पुत्र एलीएजेर मर गया। हारून पहिला महायाजक और मूसा का भाई था, इसलिये उन्होंने उसे उसके पैतृक क्षेत्र में, और पीनहास के पुत्र को, अर्थात् उसके पुत्र को दिया गया, मिट्टी दी।

तो, हम यहोशू की पुस्तक के निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, हम ईश्वर की विश्वसनीयता देखते हैं, हम ईश्वर के वादों को पूरा होते देखते हैं, हम देखते हैं कि इज़राइल अंततः भूमि में बस गया, और यहाँ पेंटाटेच के सभी आंदोलन की पूर्ति हुई। हम आगे देखते हुए चेतावनियाँ देखते हैं, हम अशुभ संकेत देखते हैं कि चीजें उतनी अच्छी नहीं हैं जितनी हम आशा करते हैं, लेकिन इस बिंदु पर, हम ईश्वर की विश्वसनीयता देखते हैं, और हम एक ईश्वरीय नेता को देखते हैं, अधिकांश भाग में, जो सही है वह कर रहा है। हम गिबोनियों के लोगों में राहाब के रूप में विदेशियों को गले लगाते हुए देखते हैं।

हम कनानियों के विरुद्ध कुछ कठोर बातें देखते हैं, लेकिन हम उसके कारण भी देखते हैं। और इसलिए, जोशुआ की किताब से हम कई सबक सीख सकते हैं और मुझे उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में आप इसका बार-बार अध्ययन करेंगे।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 21 है, जोशुआ 23-24, जोशुआ की दो विदाई।